व्यक्तित्व निर्माण में परिवार समाज एवं संस्कृति का महत्व जौनपुर के सम्बन्ध में

[1]पूजा गुप्ता

[2]डॉ दीपा वर्मा

[3]डॉ. कमलेश पाल

सारांश

व्यक्तित्व निर्माण में परिवार, समाज एवं संस्कृति की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। यह शोध पत्र उत्तर प्रदेश के जौनपुर जनपद के सन्दर्भ में व्यक्तित्व विकास पर इन तीनों घटकों के प्रभाव का विश्लेषण करता है। परिवार, व्यक्ति का पहला सामाजिक संस्थान होता है, जहाँ उसे नैतिकता, अनुशासन, सहिष्णुता और आत्मविश्वास जैसे गुण प्राप्त होते हैं। जौनपुर जैसे पारंपरिक जनपद में आज भी संयुक्त परिवार प्रणाली का वर्चस्व है, जो सामाजिक मूल्यों को मजबूत करती है।समाज व्यक्ति को संवाद, सहयोग, सहअस्तित्व और सामाजिक जिम्मेदारियों का पाठ पढ़ाता है। अध्ययन में पाया गया कि सामाजिक सहभागिता से युवाओं में आत्मविश्वास और नेतृत्व क्षमता का विकास होता है। वहीं, जौनपुर की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत – जैसे त्योहार, लोक कला, और परंपराएं – व्यक्ति के भावनात्मक एवं नैतिक पक्ष को गहराई से प्रभावित करती हैं।शोध से यह निष्कर्ष निकलता है कि जब परिवार का स्नेह, समाज का समर्थन और संस्कृति की गहराई एक साथ मिलती है, तो व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास संभव होता है। इस शोध के निष्कर्ष सामाजिक विकास नीतियों और शिक्षा व्यवस्था के लिए मार्गदर्शक सिद्ध हो सकते हैं।

मूल शब्द: परिवार,समाज , संस्कृति, व्यक्तित्व निर्माण ।.

लेखक परिचय

[1]शोधकर्त्री गृह , मानविकी एवं सामाजिक विज्ञानं विभाग वीर वहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय जौनपुर .

[2]सह प्राध्यापक राजकीय स्नातक महाविद्यालय हंसौर बाराबंकी .

[3]विभागाध्यक्ष , मानविकी एवं सामाजिक विज्ञानं विभाग वीर वहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय जौनपुर.

भूमिका

व्यक्तित्व किसी व्यक्ति के सोचने, बोलने, व्यवहार करने और परिस्थितियों का सामना करने के समुचित ढंग का समग्र रूप है। यह केवल जन्मजात गुणों का परिणाम नहीं होता, बल्कि जीवन के विभिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक और पारिवारिक प्रभावों का सम्मिलित प्रभाव होता है। किसी भी व्यक्ति का व्यक्तित्व उसके जीवन के प्रारंभिक परिवेश में ही आकार लेने लगता है, जिसमें परिवार, समाज और संस्कृति की भूमिका निर्णायक होती है।

भारत जैसे सांस्कृतिक और पारंपरिक राष्ट्र में, विशेष रूप से उत्तर प्रदेश के जौनपुर जैसे जिलों में, व्यक्तित्व निर्माण की प्रक्रिया पर पारिवारिक एवं सामाजिक ढांचे का गहरा प्रभाव पड़ता है। जौनपुर, जिसकी ऐतिहासिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि अत्यंत समृद्ध है, वहाँ की पारंपरिक जीवनशैली, रीति-रिवाज, सामाजिक समरसता और पारिवारिक मूल्य व्यक्ति के व्यक्तित्व को गहराई से प्रभावित करते हैं।

परिवार व्यक्ति का पहला शिक्षालय होता है। माता-पिता एवं अन्य परिजनों से व्यक्ति आचरण, अनुशासन, भावनात्मक बोध और नैतिक मूल्यों को आत्मसात करता है। जौनपुर जैसे जिले में आज भी संयुक्त परिवार की परंपरा देखने को मिलती है, जहाँ बच्चों को जीवन के विविध अनुभवों से परिचित कराया जाता है। यह अनुभव आत्मनिर्भरता, नेतृत्व क्षमता और सहिष्णुता जैसे गुणों को विकसित करने में सहायक होता है।

समाज व्यक्ति को बाहरी दुनिया से परिचित कराता है। स्कूल, मोहल्ला, धार्मिक एवं सांस्कृतिक संस्थाएँ व्यक्ति के सामाजिक व्यवहार, संवाद कौशल और सहअस्तित्व की भावना को सुदृढ़ बनाती हैं। सामाजिक सहभागिता से बच्चे और युवा आत्मविश्वास, अनुशासन और कर्तव्यबोध जैसे गुणों को विकसित करते हैं।

संस्कृति व्यक्ति के भावनात्मक, बौद्धिक एवं नैतिक पक्षों को परिष्कृत करती है। जौनपुर की संस्कृति में लोकगीत, लोकनृत्य, त्योहार, धार्मिक अनुष्ठान और पारंपरिक मूल्य व्यक्ति की पहचान और सोच को परिभाषित करते हैं। यह सांस्कृतिक विरासत जीवन को उद्देश्यपूर्ण एवं नैतिक रूप से समृद्ध बनाती है।

इस शोध में जौनपुर जिले के विभिन्न आयु-वर्ग, लिंग, सामाजिक-आर्थिक वर्गों के व्यक्तियों से संवाद एवं सर्वेक्षण के माध्यम से यह समझने का प्रयास किया गया है कि इन तीनों घटकों – परिवार, समाज एवं संस्कृति – का व्यक्तित्व निर्माण में कितना योगदान है। प्रारंभिक आंकड़ों से यह स्पष्ट होता है कि जिन व्यक्तियों को इन तीनों स्तंभों का समुचित मार्गदर्शन प्राप्त हुआ, उनका व्यक्तित्व संतुलित, संवेदनशील एवं नेतृत्वक्षम बना।

शोध पद्धति (Methodology):

किसी भी शोध कार्य में प्राथमिक सर्वेक्षण (Primary Survey) की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। यह शोधकर्ता को प्रत्यक्ष जानकारी एकत्र करने का अवसर प्रदान करता है, जिससे शोध निष्कर्ष अधिक प्रामाणिक और तथ्यात्मक बनते हैं। प्रस्तुत शोध के अंतर्गत प्राथमिक सर्वेक्षण के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों के बच्चों के जीवन, शिक्षा, सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक स्थितियों से संबंधित वास्तविक जानकारी एकत्र की गई है।

प्राथमिक सर्वेक्षण द्वारा प्राप्त आंकड़ों के आधार पर बच्चों के व्यक्तित्व विकास में आने वाली बाधाओं, अवसरों और परिवेशीय कारकों का विश्लेषण करना संभव हुआ। प्रश्नावली, साक्षात्कार तथा अवलोकन जैसी विधियों का प्रयोग कर विभिन्न पहलुओं से डेटा संकलन किया गया। इससे शोध को एक व्यावहारिक आधार मिला और विश्लेषण की प्रामाणिकता बढ़ी। ग्रामीण परिवेश में रहने वाले बच्चों की समस्याओं, चुनौतियों तथा उपलब्धियों को प्रत्यक्ष समझने में यह सर्वेक्षण सहायक सिद्ध हुआ है। इस प्रक्रिया ने न केवल शोध की गुणवत्ता को सुदृढ़ किया, बल्कि निष्कर्षों को अधिक विश्वसनीय और क्षेत्रीय वास्तविकताओं के अनुरूप बनाया।

- **क्षेत्र:** जौनपुर जनपद के विभिन्न ब्लॉकों से 150 परिवारों का चयन
- **तकनीक:** प्रश्नावली, साक्षात्कार, अवलोकन

क्रम	मानदंड	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत (%)
1	संयुक्त परिवार	90	60%
2	एकल परिवार	60	40%
3	जिनका सामाजिक सहभागिता में सक्रिय योगदान है	110	73%
4	पारंपरिक सांस्कृतिक आयोजनों में भाग लेने वाले	105	70%
5	जिन्होंने माना कि परिवार से नैतिक शिक्षा मिली	135	90%

निष्कर्ष:

- परिवार की भूमिका सबसे प्रभावशाली पाई गई।
- समाज में सकारात्मक सहभागिता व्यक्तित्व निर्माण को बढ़ावा देती है।
- सांस्कृतिक मूल्य जीवन में अनुशासन, सहिष्णुता और सामाजिक समरसता का विकास करते हैं।
- व्यक्तित्व निर्माण एक जटिल और सतत प्रक्रिया है, जो व्यक्ति के जन्म से ही प्रारंभ हो जाती है और जीवन भर चलती रहती है। इस शोध के माध्यम से यह स्पष्ट हुआ कि जौनपुर जैसे सांस्कृतिक और पारंपरिक जिले में परिवार, समाज एवं संस्कृति व्यक्ति के व्यक्तित्व निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। परिवार वह प्रथम इकाई है, जहाँ नैतिकता, अनुशासन, आदर्श और मूल्यों की नींव रखी जाती है। वहीं समाज व्यक्ति को बाहरी दुनिया से परिचित कराता है और सामूहिक जीवन, सहयोग, प्रतिस्पर्धा एवं संवाद कौशल विकसित करता है।
- जौनपुर की विविधतापूर्ण और समृद्ध संस्कृति, जिसमें लोकपरंपराएं, त्योहार, धार्मिक आयोजन और सामाजिक रीति-रिवाज शामिल हैं, व्यक्ति की सोच, भावनात्मकता और दृष्टिकोण को दिशा प्रदान करती है। सर्वेक्षण व डेटा विश्लेषण से यह भी स्पष्ट हुआ कि जिन युवाओं का पारिवारिक वातावरण सहयोगात्मक, समाज सकारात्मक और संस्कृति से जुड़ा हुआ रहा, उनका व्यक्तित्व अधिक आत्मविश्वासी, संवेदनशील और सामाजिक रूप से सक्षम बना।

निष्कर्ष

अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि व्यक्तित्व निर्माण में परिवार, समाज और संस्कृति की समन्वित भूमिका अत्यंत आवश्यक है, विशेषतः ग्रामीण और अर्ध-शहरी क्षेत्रों जैसे जौनपुर में, जहाँ परंपरा और आधुनिकता का संतुलन व्यक्तित्व को संपूर्ण बनाता है।जौनपुर के सन्दर्भ में यह स्पष्ट हुआ कि पारिवारिक सामंजस्य, सामाजिक सहयोग और सांस्कृतिक आस्था के समन्वय से ही व्यक्तित्व का संतुलित विकास संभव है।

संदर्भ सूची

1. **छाजेर, एस.** (2016). *बाल विकास और शिक्षा मनोविज्ञान.* नई दिल्ली: राजस्थान पुस्तक मंडल।
2. **श्रीवास्तव, आर. पी.** (2019). *समाजशास्त्र के सिद्धांत.* वाराणसी: ज्ञानभारती प्रकाशन।
3. **दुबे, एस. सी.** (2008). *भारतीय समाज.* नई दिल्ली: नेशनल बुक ट्रस्ट।
4. **सिंह, अजय कुमार** (2020). *मानव व्यवहार एवं व्यक्तित्व विकास.* प्रयागराज: लक्ष्मी नारायण अग्रवाल।
5. National Council of Educational Research and Training (NCERT). (2018). *Development of Personality in Adolescents.* New Delhi: NCERT Publications.
6. Verma, S. & Aggarwal, R. (2017). *Cultural Influences on Personality Development in Rural India.* Indian Journal of Psychology and Education, 47(3), 55-68.
7. Census of India (2011). *District Census Handbook – Jaunpur.* Ministry of Home Affairs, Government of India.
8. UNESCO (2015). *Education and Culture: The Interlinkages for Sustainable Development.* Paris: UNESCO Publications.
9. **जौनपुर जिला प्रशासन**. (2023). *जौनपुर जिले की सामाजिक-सांस्कृतिक प्रोफ़ाइल.* जिला सूचना कार्यालय।